अरदास- Aradaas

एक ओ अंकार वाहिगुरु जी की फ़तहि ।।

श्री भगौती जी सहाइ ।

वार श्री भगौती जी की पातशाही १०।

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआइ । फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ।अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ श्री हरिराइ ।श्री हरिकिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ । तेग बहादुर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ। सभ थाई होइ सहाइ । दसवां पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह साहिब जी सब थाई होइ सहाइ । दसों सतगुरुओं के ज्योति स्वरुप श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन दीदार का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरु !

पांच प्यारों, चार साहिबजादों, चालीस मुक्तों, हठी, जपी, तपियों जिन्हों ने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग वाही, देख कर अनडीठ किया, उन प्रेमी सत्यावादियों की पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरु !

जिन सिंह सिंहनियों ने धर्म पर बलिदान दिए, अंग कटवाए, सिर को खोपड़िआँ उतरवाईं, चर्खियों पर चढ़ाए गये, आरों से तन चिरवाए, गुरुद्वारों के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धर्म नहीं छोड़ा, सिक्ख धर्म का केशों तथा प्राणों सहित पालन किया, उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोले जी वाहिगुरु !

पांचो तखतों, समूह गुरद्वारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरु !

प्रथमे सर्वत खालसा जी की अरदास है जी सर्वत खालसा जी को वाहिगुरु, वाहिगुरु, वाहिगुरु चित आवे, चित आवन से सर्व सुख हो, जहाँ जहाँ खालसा जी साहिब, तहाँ तहाँ रक्षा रिआइत, देग तेग फतह, बिरद की लाज, पंथ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरु !!!

सिक्खों को सिक्खी दान, केश दान, रहित दान, विवेक दान, विश्वास दान, भरोसा दान, दानों के सिर दान नाम दान, श्री अमृतसर जी के दर्शन स्नान, चौंकियों, झंडे, बुंगे जुगो जुग अट्टल, धर्म का जयकार बोलो जी वाहिगुरु !!!

सिखों का मन नीवां, मति ऊची, मति का रक्षक स्वयं अकाल पुरख वाहिगुरु, हे अकाल पुरख ! अपने पन्थ के सदा सहाई दातार जी ! श्री ननकाणा साहिब तथा और गुरुद्वारों गुरधामों के, जिन से पन्थ को विछोड़ा गया है, खुले दर्शन दीदार और सेवा सम्भाल का दान खालसा जी को बख्शो जी । हे निमानो के मान, निताणों के ताण, निओंटों की ओट, निआसरयों के आश्रय, सच्चे पिता वाहिगुरु !

आप की सेवा में..... . * की प्रार्थना है।

अक्षर मात्रादि भूल चूक क्षमा करना, सर्व के कार्य सिद्ध हों,

उन प्रेमियों का मिलाप हो जिन के मिलने से चित्त में तेरे नाम का निवास हो ।